पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.04.2015 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का स्थापना दिवस 3 जून 2015 को सभी शाखायें धूमधाम से मनायें व कोई विशेष आयोजन करें

वर्ष-31 अंक-22 वैसाख-2072 दयानन्दाब्द 191 16 अप्रैल से 30 अप्रैल 2015 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.04.2015, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

हरिद्वार से गुरूकुल होशंगाबाद तक आर्य संन्यासी निकले मैदान में
कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता, पाखण्ड अन्धविश्वास के विरूद्ध शंखनाद
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के सैंकड़ों युवकों ने किया शानदार स्वागत

आर्य समाज,राज नगर,गाजियाबाद में मंच पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी,श्री सत्यवीर चौधरी,श्री मायाप्रकाश त्यागी,स्वामी आर्यवेश जी,श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, श्री श्रद्धानन्द शर्मा,डा.अनिल आर्य व प्रवीन आर्य

वीरवार, 16 अप्रैल 2015, वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी दिव्यानन्द जी के नेतृत्व में गत् 13 अप्रैल को वैदिक मोहन आश्रम,हरिद्वार से प्रारम्भ हुई ''वेद प्रचार जनचेतना यात्रा'' का दिल्ली पंहुचने पर बार्डर पर अभूतपूर्व स्वागत केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के सैंकड़ों आर्य युवकों ने किया। परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य, महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई, प्रवीन आर्य, रामकुमार सिंह, यशोवीर आर्य, विकास गोगिया, सन्तोष शास्त्री, जवाहर भाटिया, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य आदि अधिकारी पूरे उत्साह के साथ अभिनन्दन के लिये खड़े प्रतीक्षा कर रहे थे। यह यात्रा दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए फरीदाबाद, मथुरा, आगरा, भोपाल होते हुए 22 अप्रैल को गुरूकुल होंशगाबाद पंहुचेगी। यात्रा का शुभारम्भ हरिद्वार से हुआ इस अवसर पर स्वामी यतिश्वरानन्द जी, प्रि. धनीराम, गोबिन्दसिंह भण्डारी, प्रेमप्रकाश शर्मा, रामकुमार सिंह, वीरेन्द्र पवार आदि उपस्थित थे। बुधवार, 15 अप्रैल को यात्रा के गाजियाबाद पंहुचने पर आर्य समाज, राज नगर में सम्मेलन व अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री श्रद्धानन्द शर्मा ने की व संचालन श्री सत्यवीर चौधरी ने किया। आर्य नेता मायाप्रकाश त्यागी, डा. अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, स्वामी सत्यवेश, सुनील गर्ग, वीरसिंह, तेजपाल आर्य, ज्ञानेन्द्र आर्य आदि ने उद्बोधन दिए। प्रवीन आर्य, सौरभ गुप्ता ने व्यवस्था सम्भाली, वीरवार, 16 अप्रैल को प्रातः संन्यास आश्रम से चलने पर पहला स्वागत आर्य समाज वृन्दावन गार्डन ने किया, प्रमोद चौधरी, सुरेश आर्य, के. के.यादव, यज्ञवीर चौहान, पूरे जोश के साथ खड़े थे। दिल्ली आर्य समाज दिलशाद गार्डन ने नाश्ते की सुन्दर व्यवस्था की, सुरेश गुखीजा, अरूणा गुखी ने मोर्चा सम्भाल रखा था। शिक्षक सदन सूरजमल विहार में यशोवीर आर्य के कुशल संचालन में भव्य प्रबन्ध रहा। पार्षद महेन्द्र आहुजा ने संयोजन किया। आजाद मार्केट में पं. अखिलेश भारती, ओम सपरा, गोपाल जैन, कमल आर्य, रामबाग रोड़ पर देवेन्द्र आर्य, प्रताप नगर में केवलकृष्ण सेठी, गुलशन राय, संजीव आर्य व बिरला लाईन्स में सुधीरचन्द घई, राज कुमार चौधरी, कुंवरपाल शास्त्री, शक्ति नगर में आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, हरिसिंह चौहान, वजीरपुर में भूदेव आर्य, रामहेत आर्य, वीरेश आर्य व अशोक विहार में जीवनलाल आर्य, राममेहरसिंह, देवेन्द्र भगत, शालीमार बाग में पार्षद ममता नागपाल, अमित नागपाल, डा. ओमप्रकाश मान, अमित मान, पीतमपुरा में सुलेख अग्रवाल, सुषमा अरोड़ा, विशाखा एनक्लेव में सुनील आर्य, ओमप्रकाश गुप्ता, सत्यप्रकाश आर्य, प्रशान्त विहार में कृष्णचन्द पाहुजा, सोहनलाल मुखी, अन्जु जावा, रोहिणी में सुरेन्द्र गुप्ता, शिवकुमार गुप्ता, उर्मिला आर्या, सैनिक विहार में माता कृष्णा सपरा, सोनल सहगल, रानी बाग में सुरेश आर्य, दुर्गेश आर्य, सुदर्शन वर्मा, यज्ञदत आर्य, शकूर बस्ती में राजकुमार शर्मा, पुरी जी, मैथिली, योगेन्द्र शर्मा, पंजाबी बाग में रमेश गिरोत्रा, रवि चड्डा ने संयोजन किया तथा रमेश नगर आर्य समाज पंहुच कर सम्मेलन हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री वेद प्रकाश ने की व कुशल संचालन प्रधान नरेन्द्र आर्य सुमन ने किया। सत्यपाल नांरग, नरेश विज, हीरा लाल चावला, सुभाष वधवा, नरेन्द्र ढीगरा ने लंगर व्यवस्था सम्भाली।

शुक्रवार, 17 अप्रैल को प्रातः गुरूकुल गोतम नगर में यज्ञ व स्वागत समारोह दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल ने किया। स्वामी प्रणवानन्द जी ने अध्यक्षता की व रविदेव गुप्ता, चतरसिंह नागर, प्रकाशवीर शास्त्री ने संयोजन किया।

आर्य समाज मस्जिद मोठ, लाजपत नगर, अमर कालोनी, कालकाजी, सरिता विहार, मोलडबन्द विस्तार होते हुए दोपहर 1 बजे गुरूकुल इन्द्रस्थ,फरीदाबाद पंहुची जहां प्रीति भोज का सभी ने आनन्द लिया। श्री पी. के. मितल, आचार्य ऋषिपाल, सत्यभूषण आर्य ने संयोजन किया। यात्रा का विभिन्न स्थानों पर दिल्ली सरकार के मन्त्री श्री गोपाल राय, पार्षद स्वाति गुप्ता, विधायक सारिता सिंह, कैप्टन अशोक गुलाटी, विनोद बजाज, चर्तुभुज अरोड़ा, डॉ. दिनेश दत्त शर्मा, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, प्रदीप सवरवाल, पीताम्बरवाली, डॉ. महेश विद्यालंकार, नरेन्द्र आर्य, भूदेव शर्मा, सोहनलाल आर्य, आर्य तपस्वी सुखदेव जी, अवधेश आर्य, सुशील आर्य, सुरेन्द्र शास्त्री, जितेन्द्र डाबर, रमेश गाड़ी, रविकान्त अरोड़ा, श्याम सिंह यादव आदि ने भव्य स्वागत अभिनन्दन किया। शेष विस्तृत समाचार व चित्र अगले अंक में।

'छोटी आयु में बड़े धार्मिक काम करने वाले अमर मनीषी पं. गुरूदत्त विद्यार्थी'

– मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द के साक्षात् शिष्यों में प्रथम व यशस्वी शिष्य पं. गुरूदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल, 1864 ई. को अविभाजित भारत के पश्चिमी पंजाब राज्य के मुलतान नगर में हुआ था। महर्षि दयानन्द के जीवनकाल 1825–1883 में देश भर के अनेक लोग उनके सम्पर्क में आये जिनमें से कई व्यक्तियों को उनका शिष्य कहा जा सकता है परन्तु सभी शिष्यों में पं. गुरूदत्त विद्यार्थी उनके अनुपम व अन्यतम शिष्य थे। आपके पिता लाला रामकृष्ण जी फारसी भाषा के असाधारण विद्वान थे तथा राजकीय सेवा में अध्यापक थे। आपकी शिक्षा उर्दू और अंग्रेजी में मुलतान व लाहौर में सम्पन्न हुई थी। जन्म से ही आप अत्यन्त मेधावी थे और वैरागी प्रकृति के थे। विद्यार्थी जीवन व युवावस्था में पुस्तकों को पढ़ने में आपकी सर्वाधिक रुचि वा लगन थी। जो भी पुस्तक हाथ में आती थी उसे आप अल्प समय में ही आद्योपान्त पढ़ डालते थे। बचपन में ही आपने उर्दू व अंग्रेजी के प्रसिद्ध विद्वानों के ग्रन्थों को पढ़ लिया था। उर्दू में कविता भी कर लेते थे। विज्ञान आपका प्रिय विषय था। पाश्चात्य वैज्ञानिकों की तरह ही आप नास्तिक तो नहीं परन्तु ईश्वर के अस्तित्व में संशयवादी अवश्य हो गये थे। लाहौर स्थित देश के सुप्रसिद्ध गर्वनमेंट कालेज के आप सबसे अधिक मेधावी व योग्यतम विद्यार्थी थे तथा अपनी कक्षा में सर्वप्रथम रहा करते थे। विज्ञान में एम.ए. में भी आप पूरे पंजाब में सर्वप्रथम रहे जिसमें सारा पाकिस्तान एवं दिल्ली तक भारत के अनेक भाग सम्मिलित थे। यद्यपि आप व्यायाम आदि करते थे और स्वास्थ्य का ध्यान भी रखते थे परन्तु पढ़ने का शौक ऐसा था कि इस कारण से आप असावधानी कर बैठते थे। 26 वर्ष की आयु पूरी होने से एक सप्ताह पूर्व ही आपका देहान्त हो गया था। इस कम आयु में भी आपने अनेक अविस्मरणीय कार्य किए जिससे आपको सदा याद किया जाता रहेगा। आपने महर्षि दयानन्द के बाद स्वयं को उन जैसा बनाने का प्रयास किया था। वैदिक विद्याओं एवं वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में आपकी भी वही भावना थी और वैसा ही उत्साह था जैसा कि महर्षि दयानन्द में देखने को मिलता था। इसलिए सभी मित्र और निकट सहयोगी आपको वैदिक धर्म का सच्चा विद्वान व नेता स्वीकार करते थे।

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी को इस बात का श्रेय प्राप्त था कि उन्होंने महर्षि दयानन्द के न केवल दर्शन ही किए थे अपितु उनकी मृत्यु के दृश्य को कुछ ही दूरी से समाने से देखा था। उन दिनों आप ईश्वर के अस्तित्व के प्रति संशयवादी थे। जिन शारीरिक कष्टों से महर्षि दयानन्द आक्रान्त थे और उस पर भी जिस सहजता से उन्होंने मृत्यु का संवरण किया उसे देखकर पण्डित गुरुदत्त जी दंग रह गये थे और उनका नास्तिकता मिश्रित संशयवाद तत्क्षण दूर हो गया था। इस घटना के बाद तो आपका जीवन पूरी तरह से ज्ञानार्जन, वेदों के प्रचार–प्रसार व सामाजिक कार्यों में व्यतीत हुआ। इन कार्यों में जहां कुछ पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन व उच्चस्तरीय लेखों का प्रणयन शामिल था वहीं उन्होंने दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल की स्थापना में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। डी.ए.वी. स्कूल के लिए धन संग्रह का जो कार्य किया गया उसमें सबसे प्रमुख व प्रभावशाली सफल भूमिका आपकी ही थी। आप जिस स्थान पर भी डीएवी स्कूल की स्थापना पर उपदेश करते थे तो लोग भावविभोर होकर अपना समस्त वा अधिकांश धन दान कर देते थे। वह डीएवी के आन्दोलन से पूरी आत्मना जुड़े थे और जब डीएवी में अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव अधिक हो गया और संस्कृत व हिन्दी भाषा को उसका उचित स्थान नहीं मिला, तो आप उससे पृथक भी हो गये थे। यदि आपने डीएवी के लिए अपना योगदान न दिया होता तो हम कल्पना कर सकते हैं कि शायद डीएवी आन्दोलन सफल न हुआ होता, अतः डीएवी के विकास व उन्नति में आपका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

महर्षि दयानन्द के बाद उनके साक्षात शिष्यों में आर्ष संस्कृत व्याकरण का कोई प्रमुख प्रथम विद्वान हुआ तो वह आप ही थे। आपने आर्य समाज, लाहौर की सदस्यता लेकर संस्कृत का अध्ययन आरम्भ कर दिया था। आप मेधावी तो थे ही, इसलिये संस्कृत का आपका अध्ययन शीघ्र ही पूरा हो गया था। न केवल आपने संस्कृत पढ़ी ही अपितु उस युग में आप संस्कृत के सबसे बड़े समर्थक थे। यह बात तब थी जब कि आपका अंग्रेजी पर असाधारण अधिकार था। आज भी अंग्रेजी के विद्वानों को आपके ग्रन्थों को पढ़ने के लिए अंग्रेजी के शब्द कोषों आदि का सहारा लेना पड़ता है। संस्कृत के प्रचार–प्रसार का कार्य महर्षि दयानन्द के बाद यदि प्रथम प्रभावशाली रूप से किसी ने किया तो वह पं. गुरुदत्त जी ने ही किया। आपने अपने घर पर ही संस्कृत श्रेणी व कक्षायें खोल रखी थी जिसमें सरकारी सेवा में कार्यरत बड़ी संख्या में लोग संस्कृत अध्ययन किया करते थे जिनमें कई उच्चाधिकारी थे। संस्कृत पर आपके असाधारण अधिकार का प्रमाण आपका ईश, माण्डूक्य व मण्डूक उपनिषदों का अंग्रेजी में किया गया प्रभावशाली व प्रशंसनीय भाष्य वा अनुवाद है। यह कार्य उन दिनों सरल नहीं था और इस कोटि का भाष्य अंग्रेजी में किया जाना शायद् किसी के लिए भी सम्भव नहीं था।

भारतीय धर्म व संस्कृति का मूल आधार वेद और वैदिक साहित्य है जो संसार में प्राचीनतम व उत्पत्ति व रचना की दृष्टि से प्रथम है। अंग्रेज भारत में आये तो भारतीयों को गुलाम बनाया और चाहते थे कि उनका शासन चिरस्थाई हो। उन्होंने यहां के धर्म व धर्म ग्रन्थों का अध्ययन भी किया व कराया जिससे यह निष्कर्ष निकला कि भारतीय धर्म व संस्कृति के ग्रन्थों का मिथ्यानुवाद व तिरस्कार किये बिना अंग्रेजों का राज्य स्थाई रूप नहीं ले सकेगा। अतः प्रो. मैक्समूलर आदि अनेक अंग्रेज विद्वानों ने संस्कृत का अध्ययन कर वेद और वैदिक साहित्य पर असत्य, भ्रामक, अविवेकपूर्ण व पक्षपातपूर्ण टिप्पणियां कीं। वह अपने उद्देश्य में अवश्य सफल होते यदि महर्षि दयानन्द का भारत में प्रादूर्भाव न हुआ होता। महर्षि दयानन्द ने भारत को स्थाई रूप से गुलाम बनाने के मार्ग को वेदों के सत्यस्वरूप का प्रचार करके अवरुद्ध कर दिया। एक ओर जहां सभी विदेशी विद्वानों ने सायण वा महीधर के भाष्यों को अपने अध्ययन व प्रचार का साधन व उद्देश्य बनाया, वहीं महर्षि दयानन्द ने अपने संस्कृत व वैदिक साहित्य के अपूर्व वैदुष्य से सायण, महीधर आदि सभी वेदभाष्यकारों की सप्रमाण त्रुटियां इंगित कर उन्हें मिथ्या व अयथार्थ सिद्ध किया। महर्षि दयानन्द की मृत्यु उनके विरोधियों द्वारा विषपान से 30 अक्तूबर, सन् 1883 को अजमेर में हुई। उनके समय व बाद के समय में विदेशियों द्वारा भारतीय धर्म व संस्कृति मुख्यतः वेद और वैदिक साहित्य पर आक्षेप होते रहे जिसका प्रबल प्रतिवाद व सप्रमाण खण्डन पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ने अपने अंग्रेजी लेखों व पुस्तकों के द्वारा किया। यहां हम उनके अंग्रेजी में लिखे गये लघु व अन्य ग्रन्थों का परिचय देना उचित समझते हैं। उनके ग्रन्थ हैं – The Terminology of the Vedas] The Terminology of the Vedas and the European Scholars] Origin of Thought and Language] Vedic TeÛts Nos- 1&3 ¼Vayu Mandal] Water and Grihastha½] Ishopanishat] Mandukyopanishat] Mundakopanishat] Evidences of Human Spirit] The Realities of Inner Life] Pecuniomania] Righteousness of Unrighteousness of Flesh Eating] Man*s Progress Downwards] The Nature of Conscience] Conscience and the Vedas] Religious Sermons] A reply to Some Criticism of Swami*s Veda Bhashya] Criticism on Monier Williams* Indian Wishdom etc- etc- अल्पायु में मृत्यु हो जाने के कारण बहुत से उनके ग्रन्थों को सुरक्षित नहीं रखा जा सका जो कि विद्वानों व अध्येताओं के लिए एक बहुत बड़ी हानि है।

पण्डित जी का जीवन बहुआयामी जीवन था। उन पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है। लेख की सीमा होती है अतः इतना कहना ही समीचीन है कि उन्होंने प्राणों की चिन्ता किए बिना वेदों के प्रचार प्रसार का कार्य किया। वह लोकप्रिय वक्ता व उपदेशक थे। जनता उनके विचारों को ध्यान से सुनती थी और उनकी बातों का पालन करती थी। वह ऐसे वक्ता थे जिनकी कथनी व करनी एक थी। वह अपने जीवन का एक–एक क्षण वैदिक धर्म, संस्कृति के उत्थान व संवृद्धि के लिए व्यतीत करते थे। उनके कार्यों का उद्देश्य वैदिक धर्म का अभ्युदय, सामाजिक सुधार व देश सुधार, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि, लोगों को ज्ञानी बनाकर देश व विश्व से सभी प्रकार के अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर करना आदि था। वह अपने समय के सबसे कम आयु के अजेय धार्मिक योद्धा थे। उनके कार्यों से वैदिक धर्म का संवर्धन हुआ जिसके लिए देश और समाज उनका ऋणी है। उनकी मृत्यु क्षय रोग से 19 मार्च, सन् 1890 को लाहौर में प्रातःकाल हुई थी। मृत्यु के समय उनकी आयु 26 वर्ष थी। परिवार में उनकी माता, पत्नी व दो छोटे पुत्र थे। सहस्रों लोग उनकी अन्त्येष्टि में सम्मिलित हुए थे। पण्डित जी की मृत्यु पर न केवल आर्य समाज के नेताओं ने अपितु अनेक मतों के विद्वानों ने भी उन्हें श्रद्धाजंलि देते हुए शोक प्रकट किया था। पण्डित जी ने इतिहास में वह कार्य किया जिसका देश व विश्व पर गहरा प्रभाव हुआ। अपने कार्यों से वह सदा–सदा के लिए अमर रहेंगे। उनका साहित्य, जीवन दर्शन व कार्य ही उनके स्मारक हैं। पुण्य तिथि पर उन्हें विनम्र हार्दिक श्रद्धांजलि।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

यमुना नगर में आर्य महासम्मेलन

स्वामी सच्चिदानन्द जी के सान्निध्य में दिनांक 24,25,26 अप्रैल 2015 को अमन पैलेस, रेलवे वर्कशाप रोड़, यमुना नगर, हरियाणा में आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें स्वामी आर्य वेश जी, डा. अनिल आर्य भी पधार रहे हैं। आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

जयसिंह सैनी, प्रधान के.सी.ठाकुर–मन्त्री

युवा निर्माण से होगा राष्ट्र निर्माण ॥ ओ३म् ॥ संस्कारित युवा ही विश्व बदलेंगे

शिक्षाविद् डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कु. चौहान के सान्निध्य में

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का राष्ट्रीय शिविर

शनिवार 6 जून 2015 से रविवार 14 जून 2015 तक

विशाल युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर

स्थान : ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा (निकट मैट्रो स्टेशन बोटानिकल गार्डन)

उद्घाटन समारोह
शनिवार 6 जून, सायं 5 से 7 तक

भव्य समापन समारोह
रविवार 14 जून, सायं 5 से 7:30 तक

नयी पीढ़ी को ईश्वर भक्त, देशभक्त, संस्कारवान एवं चरित्रवान बनाने का संकल्प

राष्ट्रीय भावना, अनुशासित जीवन, नैतिक शिक्षा तथा युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा से ओतप्रोत करने तथा शारीरिक व बौद्धिक रूप से सक्षम बनाने तथा उच्चकोटि के व्यायामाचार्यों द्वारा योगासन, ध्यान, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, लाठी, जूडो-कराटे, बाक्सिंग, स्तूप आदि आत्मरक्षा सम्बन्धी शिक्षण के साथ-साथ वैदिक विद्वानों द्वारा सन्ध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर चर्चा, भाषण कला, नेतृत्व कला व आत्मविश्वास के विकास हेतु शिविर का आयोजन। अपने बच्चों को संस्कारित करने के लिए शिविर में अवश्य भेजें।

आवश्यक नियम व निर्देश:- (1) इच्छुक नवयुवक 200 रू॰ प्रवेश शुल्क सहित प्रवेश पत्र भरकर अन्तिम तिथि 31 मई तक अपना स्थान सुरक्षित करवा लें। (2) पूर्ण वेशभूषा- सफेद टी-शर्ट, सफेद सैण्डों बनियान, सफेद निक्कर, सफेद कपड़े के जूते, कान तक की लाठी, टार्च, सन्ध्या यज्ञ की पुस्तक, कापी, पैन, कुर्ता पायजामा व ऋतु अनुकूल बिस्तर भी साथ लायें। (3) आवश्यक बर्तन थाली, कटोरी, मग, गिलास आदि भी साथ लायें। (4) आयु 13 वर्ष से 20 वर्ष तक के युवक शिविर में भाग ले सकते हैं। (5) अनुशासन व दैनिक दिनचर्या प्रात 4 बजे से रात्री 10 बजे तक का पालन करना अनिवार्य होगा। (6) आराम पसन्द बच्चे कृपया न भेजें। (7) परिषद् की ओर से भोजन व आवास प्रबन्ध नि:शुल्क रहेगा। -- **सभी शिविरार्थी 6 जून को दोपहर 1:00 बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जायें** --

बौद्धिक: डॉ.जयेन्द्र आचार्य, आ.गवेन्द्र शास्त्री, डा.वीरपाल विद्यालंकार, चन्द्रशेखर शर्मा, ब्रह्मदेव वेदालंकार **मधुर भजन:** आ.अंकित उपाध्याय
शिक्षक: सर्वश्री योगेन्द्र आर्य, दुर्गाप्रसाद शर्मा, बिजेन्द्र आर्य, मनोज शास्त्री, प्रणवीर आर्य, सौरभ गुप्ता, आशीष, सोमपाल आर्य, पिन्टु, गौरव गुप्ता
प्रबन्धक: सर्वश्री एस. सी. ग्रोवर, विश्वनाथ आर्य, ओमवीर सिंह, कर्णसिंह वर्मा, यज्ञवीर चौहान, मानवेन्द्र शास्त्री, शिशुपाल आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री, के.के. यादव, वेदप्रकाश आर्य, रामदेव आर्य, देवदत्त आर्य, अरूण, प्रदीप,माधव सिंह, गौरव,राकेश, विमल, हीराप्रसाद शास्त्री, सुरेश आर्य

दानी महानुभावों की सेवा में अपील

आप जानते ही हैं कि इस विशाल रचनात्मक आयोजन में नौ दिन तक तीन समय के प्रात: राश तथा भोजन प्रबन्ध पर हजारों रुपये व्यय हो जाता है जो कि आपके स्नेह व सहयोग से ही पूरा होना है। अत: आपसे अनुरोध है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अपनी ओर से, अपनी आर्य समाज या मित्रों की ओर से अधिक से अधिक सहयोग करवाने की कृपा करें। कृपया समस्त क्रास चैक/ड्राफ्ट **''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली''** के नाम से भिजवाने की कृपा करें। आप ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइण्ड, मसाले, पाउडर दूध, सब्जी, दलिया के रूप में भी सामान भिजवाकर सहयोग कर सकते हैं।

स्वागत समिति: सर्वश्री अजय चौहान, कै. अशोक गुलाटी, प्रवीण त्यागी, डॉ. डी.के. गर्ग, नवीन रहेजा, जितेन्द्र नरूला, विकास आर्य, डॉ. आर.के. आर्य, रामलुभाया महाजन, जितेन्द्र डावर, रविदेव गुप्ता, चत्तरसिंह नागर, सुभाष चान्दला, लक्ष्मी सिन्हा, राजीव खन्ना, माता शीला ग्रोवर, रामकृष्ण तनेजा, श्यामसिंह यादव, रविन्द्र मेहता, ओम सपरा, प्रमोद सपरा, योगराज अरोड़ा, के.एल. पुरी, मुन्शीराम सेठी, जे.के. मेहता, प्रभा सेठी, प्रि. अन्जु महरोत्रा, अविनाश बंसल, अरूण बंसल, अमीरचन्द रखेजा, अशोक सरदाना, अजय जिंदल, के.एल. वर्मा, मदनलाल आर्य, बृजभूषण तायल, प्रदीप तायल, सुरेन्द्र कोहली, डॉ. मुकेश आर्य, विजयारानी शर्मा, रामकृष्ण सतीजा, डॉ, सुन्दरलाल कथूरिया, रवि चड्डा, राजेन्द्र लाम्बा, सुरेन्द्र शास्त्री, सुरेन्द्र गुप्ता, सत्यानन्द आर्य, कै. रूद्रसेन सिन्धु, अशोक-धर्मपाल सिब्बल, चौ. ब्रह्मप्रकाश मान, सुधीर सिंघल, श्रद्धानन्द शर्मा, सत्यवीर चौधरी, रमेश गाडी, तिलक चांदना, डॉ. राजीव चावला, हरिमोहन शर्मा, सुधीर खुराना, भारतभूषण साहनी, संजीव सिक्का, रणसिंह राणा, सुषमा अरोड़ा, नरेन्द्र सुमन, रमेश कुमारी भारद्वाज, रमेश छाबड़ा, एस. के. सचदेवा, नीता-अशोक जेठी, जवाहर भाटिया, ओमप्रकाश पाण्डेय, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, रामगोपाल शर्मा, आर. एस तोमर, डॉ. ओमप्रकाश मान, कस्तूरी लाल मक्कड़, सरोजनी दत्ता, उर्मिला आर्या, वेद प्रकाश, पुष्पलता वर्मा, विमल वर्मा, अंजु जावा, हीरालाल चावला, मूलचन्द शर्मा, विजय आर्य, एच. आर. साहनी, सहदेव नागिया, महेश भार्गव, प्रमोद चौधरी, चन्द्रमोहन कपूर, अमरनाथ गोगिया, रजनीश गोयनका, मे.जनरल आर.एस. भाटिया

-: निवेदक :-

आनन्द चौहान	**डॉ. अनिल आर्य**	**यशोवीर आर्य**	**महेन्द्र भाई**	**सुशील आर्य**	**दर्शन अग्निहोत्री**
शिविर संरक्षक	शिविर अध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	शिविर संयोजक	राष्ट्रीय मंत्री	**मायाप्रकाश त्यागी**
रामकुमार सिंह	**कृष्णचन्द पाहूजा**	**आनन्दप्रकाश आर्य**	**दुर्गेश आर्य, सुरेश आर्य**	**विकास गोगिया**	**प्रभात शेखर**
प्रान्तीय संचालक	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय मंत्री	प्रबन्धक	**गायत्री मीना**
संतोष शास्त्री	**धर्मपाल आर्य**	**प्रवीण आर्य**	**देवेन्द्र भगत, हर्ष बवेजा**	**राकेश भटनागर**	**राजीव कु. परम**
प्रान्तीय महामन्त्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय मंत्री	प्रेस सचिव	राष्ट्रीय मंत्री	स्वागताध्यक्ष

कार्यालय: आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, फोन: 9810117464, 9013137070, 9971467978
Website: www.aryayuvakparishad.com **Email:** aryayouthn@gmail.com

गुरूकुल खेड़ाखुर्द दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 12 अप्रैल 2015, दिल्ली देहात के सुप्रसिद्व गुरूकुल खेड़ाखुर्द का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। सभा को सम्बोधित करते मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य व मंच पर स्वामी विश्वानन्द जी, राष्ट्रीय कवि प्रो. सारस्वतमोहन मनीषी, प्रधान चौ. ब्रह्मप्रकाश मान। द्वितीय चित्र–बांये से मन्त्री जोगेन्द्र मान,महेन्द्र भाई, मनोज मान, गवेन्द्र शास्त्री, डा. अनिल आर्य,चौ. ब्रह्मप्रकाश मान। आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने भी विचार रखे। आचार्य सुधांशु ने कुशल संचालन किया।

जन्तर मन्तर पर गौ रक्षा के लिये प्रदर्शन व बाबरपुर आर्य समाज का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 12 अप्रैल 2015, जैन मुनि श्री प्रज्ञान गौ रक्षा के लिये जन्तर मन्तर पर भूख हड़ताल पर बैठै हैं। उनके समर्थन में हिन्दु संगठनों ने प्रदर्शन किया। इस अवसर पर स्वामी विशुद्धानन्द जी को गौ रक्षा के लिये समर्थन पत्र देते डा. अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, गवेन्द्र शास्त्री, विष्णु गुप्त आदि। द्वितीय चित्र–रविवार, 5 अप्रैल 2015, आर्य समाज, बाबरपुर पूर्वी, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि डा. अनिल आर्य पुस्तक का विमोचन करते हुए,साथ में मन्त्री चन्द्रपाल भारद्वाज, प्रधान ऋषिपाल खोखर, शिशुपाल आर्य, सुनहरीलाल यादव, महेन्द्र भाई, पियतमसिंह प्रियतम, सोहनलाल आर्य, हरिओम बंसल, नरेन्द्र आर्य आदि।

इन्द्रप्रस्थ विस्तार में सांसद महेश गिरी व डा.अनिल आर्य का अभिनन्दन

शनिवार, 11 अप्रैल 2015, इन्द्रप्रस्थ पंजाबी सभा के तत्वावधान में बैसाखी पर्व का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सांसद महेश गिरी का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, विधायक ओमप्रकाश शर्मा, बलदेव गुप्ता। द्वितीय चित्र–डा. अनिल आर्य का स्वागत करते राजेन्द्र दता, रोशनलाल मल्होत्रा व संयोजक विकास गोगिया।

हिन्दु महासभा ने किया श्री मायाप्रकाश त्यागी व श्री जयनारायण अरूण का अभिनन्दन

सोमवार, 13 अप्रैल 2015, अखिल भारत हिन्दु महा सभा के शताब्दी समारोह में आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी व श्री जयनारायण अरूण का अभिनन्दन करते चन्द्रप्रकाश कौशिक, मुन्नालाल शर्मा, वीरेश त्यागी व डा.राजीव रंजन। द्वितीय चित्र–रविवार, 22 मार्च 2015, आर्य समाज, भलस्वा, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर डा. अनिल आर्य का अभिनन्दन करते पार्षद अजीत यादव, सुरेन्द्र गुप्ता, रणसिंह राणा, ओम सपरा। संचालन नन्दलाल शास्त्री ने किया।

आर्य समाजों के निर्वाचनः–

1. स्त्री आर्य समाज, रमेश नगर, नई दिल्ली के चुनाव में डा.सुमेधा शर्मा–प्रधान, सावित्री खेड़ा–मन्त्राणी व ईश कुमारी–कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।
2. आर्य समाज, खलासी लाईन, सहारनपुर के चुनाव में श्री बारूराम शर्मा–प्रधान, डा. राजवीर सिंह वर्मा–मन्त्री व श्री रामकिशोर सैनी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।
3. आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश, पार्ट–2, नई दिल्ली के चुनाव में श्री सहदेव नागिया–प्रधान, श्री एस.के.कोहली–मन्त्री व श्री आर.एन.सलूजा कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।
4. आर्य समाज, जंगपुरा विस्तार, नई दिल्ली के चुनाव में श्री पी. के. भाटिया–प्रधान, श्री विजय मलिक–मन्त्री व श्री विनोद मलिक–कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

आर्य कन्या शिविर दिल्ली में

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् के तत्वावधान में "आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर" रविवार, 17 मई से 24 मई 2015 तक आर्य समाज, रमेश नगर, नई दिल्ली में लगेगा।

सम्पर्क करें– उर्मिला आर्या (अध्यक्षा), मो.9711161843, अर्चना पुष्करना (महामन्त्री)– 09899555280 , अनिता कुमार (संयोजक),मो. 9212645522.

श्री पी.के.मितल प्रधान निर्वाचित

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के चुनाव में श्री पी. के.मितल, एडवोकेट, प्रधान, डा. गजराजसिंह आर्य, मन्त्री व श्री अशोक शास्त्री कोषाध्यक्ष चुने गये।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970